

वन और जीवन

भूमिका

- न्यूयार्क के पर्यावरण संरक्षण विभाग द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार सौ विशाल वृक्ष प्रतिवर्ष 53 टन कार्बन डाईऑक्साइड और दो सौ किलोग्राम अन्य वायु प्रदूषकों को दूर करते हैं और पांच लाख तीस हजार लीटर वर्षा जल को संरक्षित करने में भी मददगार साबित होते हैं।
- किसी भी वृक्ष के वजन में एक ग्राम की वृद्धि से ही उससे 2.66 ग्राम अतिरिक्त ऑक्सीजन मिलती है और किसी विशाल वृक्ष से प्राप्त होने वाली ऑक्सीजन, फल, लकड़ी, बायोमास इत्यादि की कीमत के आधार पचास साल की अवधि में ऐसे वृक्ष की आर्थिक कीमत करीब दो लाख डॉलर होती है।

भारतीय वन सर्वेक्षण की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में सघन वनों का क्षेत्रफल तेजी से घट रहा है। 1999 में सघन वन 11.48 फीसद थे, जो 2015 में घट कर मात्र 2.61 फीसद रह गए। देश के कई राज्यों में वन क्षेत्र तेजी से कम हुआ है। सघन वनों का दायरा सिमटते जाने के चलते ही वन्यजीव शहरों-कस्बों का रुख करने को विवश होने लगे हैं।

इसी के चलते जंगली जानवरों की इंसानों के साथ मुठभेड़ों की घटनाएं बढ़ रही हैं।

‘नेचर’ पत्रिका की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में इस समय करीब 35 अरब वृक्ष हैं और इस लिहाज से प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में करीब 28 वृक्ष आते हैं। इनमें से अधिकांश सघन वनों में हैं।

वृक्षों के कम होने के कारण-

अंधाधुंध कटाई - वृक्षों की अंधाधुंध कटाई के चलते सघन वनों का क्षेत्रफल भी तेजी से घट रहा है। भारत में स्थिति बदतर इसलिए है कि वृक्षों की अवैध कटाई का सिलसिला बड़े पैमाने पर चलता रहा है।

वृक्षारोपण उदासीनता- वृक्षारोपण के मामले में उदासीनता और लापरवाही बरती जाती रही है। वृक्षारोपण के मामले में सरकारी निष्क्रियता जगजाहिर रही है। कैंग की एक रिपोर्ट के अनुसार 2015-17 के बीच दिल्ली में 13018 वृक्ष काटे गए थे, जिसके बदले में 65090 पौधे लगाए जाने थे, लेकिन मात्र 21048 वृक्ष ही लगाए गए और इनमें भी बहुत सारे सजावटी पौधे लगा कर खानापूर्ति कर दी गई। यह मात्र एक उदाहरण है।

जलवायु प्रभाव - देश में मौसम चक्र तेजी से बदल रहा है, जलवायु संकट गहरा रहा है, वायु प्रदूषण हो या जल प्रदूषण अथवा भू-क्षरण, इन समस्याओं से केवल ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगा कर ही निपटा जा सकता है। एक सामान्य वृक्ष सालभर में लगभग 100 किलोग्राम ऑक्सीजन देता है, जबकि एक व्यक्ति को वर्षभर में 750 किलो ऑक्सीजन की जरूरत होती है। नीम, बरगद, पीपल जैसे बड़े छायादार वृक्ष, जो पचास साल या उससे ज्यादा पुराने हों, उनसे तो प्रतिदिन 140 किलो तक ऑक्सीजन मिलती है। ऐसे में हमें यह बात भली-भांति समझ लेनी चाहिए कि यदि वृक्ष बचे रहेंगे, तभी पृथ्वी पर जीवन बचेगा।

प्रदूषण - विश्व स्वास्थ्य संगठन के विश्वव्यापी वायु प्रदूषण डाटाबेस के अनुसार दुनिया के सर्वाधिक प्रदूषित पंद्रह शहरों में से 14 भारत में हैं, कार्बन उत्सर्जन मामले में दिल्ली दुनिया के 30 शीर्ष शहरों में शामिल है। भारत के कई शहर दुनिया के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में शामिल हैं।

शहरी विकास - एक ओर जहां हरियाली की कमी के चलते पर्यावरण का संतुलन बिगड़ने से प्रकृति का प्रकोप बार-बार सामने आ रहा है। सरकारें ही शहरी विकास और देश के विकास को रफ्तार देने, लंबे-चौड़े एक्सप्रेस-वे बनाने के नाम पर लाखों ऐसे वृक्षों का सर्वनाश करने का फरमान जारी करने में विलंब नहीं करतीं, जिनमें से बहुत से पेड़ पुराने नीम, पीपल और बरगद जैसे विशालकाय होते हैं।

पिछले वर्ष दिल्ली में भी 16,500 पेड़ काटे जाने का फरमान सुनाया गया था, किंतु चिपकों आंदोलन की तर्ज पर दिल्लीवासियों ने व्यापक स्तर पर जन अभियान चलाकर सरकार को अपना निर्णय वापस लेने को विवश कर इन वृक्षों को कटने से बचा लिया था।

लाभ- वृक्ष न केवल हमें भावनात्मक तथा आध्यात्मिक शांति प्रदान करते हैं, बल्कि मिट्टी को रोके रख कर हमें बाढ़ के खतरे से बचाते हैं, कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर आसपास के वायुमंडल को स्वच्छ रखते हैं, पर्याप्त वर्षा कराने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, विषैले पदार्थों को अवशोषित करते हुए पोषक तत्वों का नवीनीकरण करते हैं, खाद्य सामग्री तथा औषधियां उपलब्ध कराते हैं, उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करते हैं तथा वन्य जीवों को आश्रय प्रदान करते हैं।

वन स्थिति रिपोर्ट 2017

1. 'भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2017' में वन क्षेत्र के मामले में भारत दुनिया के शीर्ष 10 देशों में है। ऐसा तब है जबकि बाकी 9 देशों में जनसंख्या घनत्व 150 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है और भारत में यह 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। भारत के भू-भाग का 24.4 प्रतिशत हिस्सा वनों और पेड़ों से घिरा है, हालांकि यह विश्व के कुल भू-भाग का केवल 2.4 प्रतिशत हिस्सा है और इनपर 17 प्रतिशत मनुष्यों की आबादी और मवेशियों की 18 प्रतिशत संख्या की जरूरतों को पूरा करने का दबाव है।
2. भारत वन स्थिति रिपोर्ट आकलन यह दिखाता है कि देश में वन और वृक्षावरण की स्थिति में 2015 की तुलना में 8021 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है। इसमें 6,778 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि वन क्षेत्रों में हुई है, जबकि वृक्षावरण क्षेत्र में 1243 वर्ग किलोमीटर की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।
3. घने वन क्षेत्र वायुमंडल से सर्वाधिक मात्रा में कार्बन डाईऑक्साइड सोखने का कम करते हैं। घने वनों का क्षेत्र बढ़ने से खुले वनों का क्षेत्र भी बढ़ा है। रिपोर्ट तैयार करने में वैज्ञानिक पद्धति का इस्तेमाल किया गया है।
4. राज्यों में वनों की स्थिति के राज्यवार आंकड़ों के मामले में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और केरल का प्रदर्शन सबसे अच्छा रहा। आंध्र प्रदेश में वन क्षेत्र में 2141 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई, जबकि कर्नाटक 1101 किलोमीटर और केरल 1043 वर्ग किलोमीटर वृद्धि के साथ दूसरे व तीसरे स्थान पर रहा। क्षेत्र के हिसाब से मध्य प्रदेश के पास 77414 वर्ग किलोमीटर का सबसे बड़ा वन क्षेत्र है। कुल भू-भाग की तुलना में प्रतिशत के हिसाब से लक्षद्वीप के पास 90.33 प्रतिशत का सबसे बड़ा वनाच्छादित क्षेत्र है।
5. रिपोर्ट के ताजा आंकलन के अनुसार देश के 15 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों का 33 प्रतिशत भू-भाग वनों से घिरा है। इनमें से 7 राज्यों और संघ शासित प्रदेशों का 75 प्रतिशत से अधिक भू-भाग वनाच्छादित है। देश का 40 प्रतिशत वनाच्छादित क्षेत्र 10 हजार वर्ग किलोमीटर या इससे अधिक के 9 बड़े क्षेत्रों के रूप में मौजूद है।
6. रिपोर्ट के अनुसार देश में वाह्य वन एवं वृक्षावरण का कुल क्षेत्र 582.377 करोड़ घन मीटर अनुमानित है, जिसमें से 421.838 करोड़ घन मीटर क्षेत्र वनों के अंदर है, जबकि 160.3997 करोड़ घन मीटर क्षेत्र वनों के बाहर है।
7. रिपोर्ट में देश का कुल बांस पैदावार क्षेत्र 1.569 करोड़ हेक्टेयर आकलित किया गया है। बांस के उत्पादन में वर्ष 2011 के आकलन की तुलना में 1.9 करोड़ टन की वृद्धि दर्ज हुई है। सरकार ने वन क्षेत्र के बाहर उगाई जाने वाली बांस को वृक्षों की श्रेणी से हटाने के लिए हाल ही में संसद में एक विधेयक पारित किया है। इससे लोग निजी भूमि पर बांस उगा सकेंगे जिससे किसानों की आजीविका बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

8. यह रिपोर्ट भारत सरकार की डिजिटल इंडिया की संकल्पना पर आधारित है, इसमें वन एवं वन संसाधनों के आकलन के लिए भारतीय दूर संवेदी उपग्रह रिसोर्स सेट-2 से प्राप्त आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है।

प्रारंभिक परीक्षा प्रश्न-

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत को दुनिया के उन 10 देशों में से 8वां स्थान दिया गया है जहां वार्षिक स्तर पर वन क्षेत्रों में सबसे ज्यादा वृद्धि दर्ज हुई है।
- 2.. देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र में वनों और वृक्षावरण क्षेत्र का हिस्सा 24.39 प्रतिशत है।
- 3.. भारत वनस्थिति रिपोर्ट 2017 के अनुसार देश में कच्छ वनस्पति का क्षेत्र 4921 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें वर्ष 2015 के आकलन की तुलना में कुल 181 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सत्य है/हैं?

- (a) 1 और 2
- (b) 2 और 3
- (c) 1 और 3
- (d) उपर्युक्त सभी

मुख्य परीक्षा प्रश्न

प्रश्न- वनों की वर्तमान स्थिति अपने क्षरण के कारण पूरे विश्व में दयनीय हो गई है, कारण मानवीय और प्रकृति जनक दोनों हैं। इस कथन के संदर्भ में वन संक्षरण हेतु सरकार, समाज एवं स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका का उल्लेख करें।